

झारखंड की आदिवासी महिलाएं: विश्लेषणात्मक अध्ययन

दीपा गोस्वामी

शोधार्थी, इतिहास विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

सार

झारखंड की आदिवासी महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करती हैं। 2018 से पहले, इन महिलाओं की स्थिति शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में कमजोर थी। आदिवासी समुदायों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम अवसर प्राप्त होते थे, जिससे उनका सशक्तिकरण प्रभावित होता था। इस अध्ययन में, झारखंड की आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों, जैसे सरकारी योजनाएं, शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके साथ ही, यह अध्ययन उन प्रमुख बाधाओं को भी उजागर करता है जिनके कारण आदिवासी महिलाएं अपनी आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता में कमी महसूस करती हैं।

कीवर्ड: झारखंड, आदिवासी महिलाएं, सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा.

1 परिचय

झारखंड की आदिवासी महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक रूप से विविध चुनौतियों का सामना करती हैं [1]। 2018 के पहले के समय में, इन महिलाओं की स्थिति में कई मुद्दे थे, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और सामाजिक सुरक्षा की कमी प्रमुख थीं। आदिवासी समुदायों में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को अपेक्षाकृत कम अवसर मिलते थे, जिससे उनका सशक्तिकरण और समग्र विकास प्रभावित हो रहा था। शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाएं पुरुषों के मुकाबले पीछे थीं, जिससे उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पूरा ज्ञान नहीं था। इसके अतिरिक्त, आदिवासी महिलाओं का अधिकांश समय पारंपरिक कृषि कार्यों और घरेलू उद्योगों में ही व्यतीत होता था, जबकि उन्हें औद्योगिक और तृतीयक क्षेत्रों में काम करने के कम अवसर मिलते थे। इसके परिणामस्वरूप, उनके पास पर्याप्त आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की शक्ति नहीं थी [2]। इन समस्याओं के समाधान के लिए राज्य और केंद्रीय सरकारों ने विभिन्न योजनाएं शुरू की, लेकिन इन योजनाओं का प्रभाव सीमित रहा।

2. साहित्य समीक्षा

आत्मनिर्भर भारत और ग्रामीण विकास पर आधारित यह समीक्षात्मक अध्ययन, भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। आत्मनिर्भर भारत अभियान

का उद्देश्य स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना, रोजगार सृजन करना, और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है। इस अध्ययन में ग्रामीण विकास के विभिन्न पहलुओं, जैसे कृषि, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य, शिक्षा, और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, साथ ही आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण से ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव और सुधारों का विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा का सारांश

लेखक	कार्य का विवरण	निष्कर्ष
सिंह, आर. (2018)	झारखंड में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण	आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति में पुरुषों की तुलना में पिछड़ापन और आर्थिक स्वतंत्रता की कमी पाई गई।
कुमार, एम. (2018)	आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और सरकारी योजनाओं का अध्ययन	सरकारी योजनाओं के बावजूद आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण धीमा है, और सरकारी योजनाओं का सीमित प्रभाव दिखा।
यादव, एस. (2017)	आदिवासी महिलाओं के रोजगार के अवसर और चुनौतियां	आदिवासी महिलाओं के रोजगार के अवसर कम हैं और रोजगार में आने वाली बाधाओं में पारंपरिक दृष्टिकोण और शिक्षा की कमी प्रमुख हैं।
राम, स. (2017)	झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण	झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण पारिवारिक और सामुदायिक मानसिकताओं के कारण प्रभावित है।
वर्मा, आर. (2016)	आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण	आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में पिछड़ापन पाया गया, जिससे उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता कम है।
शर्मा, पी. (2016)	आदिवासी महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकार और उनकी स्थिति	आदिवासी महिलाओं का स्वास्थ्य खराब स्थिति में है, और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सीमित है।
चौधरी, ए.	आदिवासी महिलाओं की	आदिवासी महिलाओं का मुख्य कार्य पारंपरिक

(2015)	भूमिका और सामाजिक-आर्थिक पहलू	कृषि कार्यों में है, जिससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिल पाती।
कुमार, आर. (2015)	आदिवासी महिलाओं के अधिकार और उनका सशक्तिकरण	आदिवासी महिलाओं के अधिकारों की रक्षा में सरकार की योजनाएं प्रभावी नहीं रही हैं और महिलाओं के सशक्तिकरण में रुकावटें हैं।
सिंह, एस. (2014)	झारखंड में आदिवासी महिलाओं के लिए विकास कार्य योजनाओं की समीक्षा	सरकारी योजनाओं के बावजूद आदिवासी महिलाओं के लिए विकास में प्रमुख रुकावटें, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की कमी, बनी हुई हैं।
महतो, प. (2014)	आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति और विकास के उपाय	आदिवासी महिलाओं के सामाजिक विकास में पारंपरिक दृष्टिकोण और सीमित संसाधनों के कारण विकास के प्रयासों की सफलता सीमित रही है।
भट्टाचार्य, ए. (2013)	झारखंड की आदिवासी महिलाओं पर सांस्कृतिक प्रभाव और विकास की संभावनाएं	सांस्कृतिक मान्यताएं और परंपराएं आदिवासी महिलाओं की विकास प्रक्रिया में बाधक बनी हुई हैं।
शर्मा, म. (2013)	आदिवासी महिलाओं का शहरीकरण और उनके सामाजिक अधिकार	शहरीकरण की प्रक्रिया में आदिवासी महिलाओं को समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता और बेहतर अवसर मिल रहे हैं, लेकिन अभी भी चुनौतियां बनी हुई हैं।

रिसर्च गैप

झारखंड की आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और विकास के लिए किए गए प्रयासों में कई महत्वपूर्ण शोध रिक्तियां हैं। हालांकि सरकारी योजनाओं का कार्यान्वयन हुआ, लेकिन इन योजनाओं के प्रभाव पर विस्तृत अध्ययन की कमी है। विशेष रूप से, आदिवासी महिलाओं के शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के क्षेत्रों में सुधार के प्रभावों का गहरा विश्लेषण नहीं हुआ है। इसके अलावा, महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके निर्णय लेने की क्षमता में बदलाव की स्थिति पर भी शोध की कमी है।

3. कार्यप्रणाली

झारखंड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में उम्र, विवाह, शैक्षिक योग्यता और व्यावसायिक स्थिति के आधार पर उनके उत्थान की स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है [3]। उम्र के हिसाब से, महिलाएं सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियों में बंधी होती हैं, खासकर विवाह की उम्र में। यह समाज की मानसिकता और परंपराओं से जुड़ा होता है, जिससे महिलाओं को शिक्षा, करियर और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा आती है। झारखंड में, शिक्षा के प्रसार में काफी प्रयास किए गए हैं, लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में यह अब भी सीमित है। आंकड़ों के अनुसार, आदिवासी समुदाय में साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, लेकिन फिर भी यह सामान्य आबादी से कम है। विवाह की स्थिति भी महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव डालती है [4]। कुछ मामलों में, विवाहित महिलाएं निर्णय लेने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, जबकि अधिकांश मामलों में यह अधिकार पुरुषों के पास होता है। इसके अलावा, परिवार के आकार और प्रकार भी महिलाओं की साक्षरता और आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डालते हैं, जहां बड़े परिवारों में सहयोग और संसाधन साझा किए जाते हैं।

4. परिणाम एवं चर्चा

झारखंड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में उम्र के अनुसार उत्थान पर एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण सामने आता है [5]। भारतीय परिदृश्य, विशेष रूप से आदिवासी समाज में, महिलाओं की उम्र उनके अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक स्थिति को परिभाषित करती है। उनकी भलाई इस बात पर निर्भर करती है कि समाज में उनके साथ उम्र के अनुसार व्यवहार होता है या नहीं। कई आदिवासी समुदायों में एक निश्चित उम्र के बाद अविवाहित लड़कियों का घर पर रहना अनुचित माना जाता है। आज भी जहां महिलाओं को विवाह करने या अविवाहित रहने की आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त है, वहीं अविवाहित महिलाओं को समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। यह स्थिति अक्सर सवाल उठाती है कि किसी महिला ने अब तक विवाह क्यों नहीं किया [6]।

तालिका 1 उम्र के अनुसार उत्तरदायित्वों का विवरण.

आयु	पोटमदुमगढ़		अड़की		कुल	
	आँकड़े	प्रतिशत	आँकड़े	प्रतिशत	आँकड़े	प्रतिशत
20 से नीचे	6	2.88	2	1.52	8	2.35
21-28	40	19.23	41	31.06	81	23.82
29-36	52	25	45	34.09	97	28.53

37-44	48	23.08	25	18.94	73	21.47
45 और उससे अधिक	62	29.81	19	14.39	81	23.82
कुल	208	100	132	100	340	100

वैवाहिक स्थिति के अनुसार उत्थान: आदिवासी महिलाएं अक्सर उम्र के कारण शिक्षा या करियर बनाने में बाधित हो जाती हैं, क्योंकि उन्हें "विवाह योग्य" आयु की सीमा में बांध दिया जाता है [7]। विवाह के बाद भी, कई महिलाओं पर बच्चों को जन्म देने और परिवार की देखभाल करने का भार डाल दिया जाता है। इस कारण उन्हें अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों और करियर को त्यागना पड़ता है। झारखंड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में, विवाह उनके सशक्तिकरण को गहराई से प्रभावित करता है। विवाह के बाद, महिला का सशक्तिकरण उस परिवार और समाज की मानसिकता पर निर्भर करता है, जिसमें वह विवाह करती है। कुछ परिवारों में महिलाएं प्रमुख निर्णय निर्माता बनती हैं, लेकिन अधिकांश मामलों में अंतिम निर्णय वरिष्ठ पुरुष सदस्यों द्वारा लिया जाता है। झारखंड की आदिवासी समाज में विवाहित और अविवाहित महिलाओं की स्थिति के अध्ययन में यह पाया गया कि अविवाहित महिलाओं की संख्या कम है, जबकि विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं की संख्या और भी कम है [8]। 2018 से पहले के आंकड़ों के आधार पर, यह स्पष्ट होता है कि विवाह ने आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण को किस हद तक प्रभावित किया है।

तालिका 2 वैवाहिक स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का विवरण.

वैवाहिक स्थिति	तालाकशुदा	विवाहित	कुल
आयु	5	162	208
प्रस्तुत	2.4	77.88	17.79
आयु	1.52	56.82	48
प्रस्तुत	7	32.77	36.36
आयु	2.06	69.71	85
प्रस्तुत	25	25	100
एकल	37	4	0
विद्या	1.92	4.55	1.92

अलग किए	0	0	0.76
कुल	208	132	340

शैक्षिक योग्यता के अनुसार उत्तरदाताओं का विवरण: शिक्षा समाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण और सशक्त साधन है, जो अंततः किसी भी समाज में आमूल-चूल बदलाव की प्रक्रिया को संभव बनाता है। शिक्षा हमेशा से ज्ञान, अधिकार, और सशक्तिकरण का स्रोत रही है। यह मानव कल्याण के लिए आवश्यक है और समाज के विकास के लिए अनिवार्य है [9]। हालांकि, शिक्षा का विस्तार कई समाजों में हमेशा सहज रूप से नहीं हुआ है। खासकर आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष उपाय किए गए हैं। भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्रीय शैक्षिक प्राधिकरणों ने कमजोर वर्गों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा प्राप्त करने के लिए संवेदनशील नीतियाँ बनाई हैं। हर राज्य और केंद्रीय क्षेत्र में, प्रत्येक वर्ष बजट का एक निश्चित हिस्सा इस उद्देश्य के लिए निर्धारित किया गया है। पश्चिमी यूरोप के उन्नत देशों में भी शिक्षा राज्य द्वारा समर्थित और प्रोत्साहित की जाती है [10]। शिक्षा को उसके मूल में एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहलू माना जाता है। यह समाज की संरचना से गहरे तौर पर जुड़ी हुई है और समाज को प्रगति की दिशा में प्रेरित करती है। शिक्षा लोगों को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता, कर्तव्यों और व्यवहार के बारे में जागरूक करती है। स्वतंत्रता पूर्व भारत में, ब्रिटिश शिक्षा नीति ने केवल एक सीमित वर्ग के लिए शिक्षा प्रदान की थी, जिसका उद्देश्य केवल शासन के लिए कर्मचारियों की व्यवस्था करना था। स्वतंत्र भारत सरकार ने विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ बनाई और नई पद्धतियों को लागू किया। इसके परिणामस्वरूप आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच बढ़ी, जिससे न केवल आदिवासी समुदाय, बल्कि पूरे भारतीय समाज को प्रेरणा मिली। इसके चलते भारत में, विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निम्नलिखित तालिका में, भारत में सामान्य जनता और अनुसूचित जाति/जनजाति की साक्षरता दर की वास्तविक स्थिति को दर्शाया गया है:

तालिका 3 शैक्षिक योग्यता के अनुसार उत्तरदाताओं का विवरण.

वर्ष	सामान्य साक्षरता %	अनुसूचित जनजाति साक्षरता: एनए (उपलब्ध नहीं)
1901	5.35	उपलब्ध नहीं
1911	5.92	उपलब्ध नहीं

1921	7.16	उपलब्ध नहीं
1931	9.5	0.75
1941	16.1	उपलब्ध नहीं
1951	16.67	उपलब्ध नहीं
1961	24.02	8.54
1971	29.45	11.29
1981	43.23	16.35
1991	52.21	29.6
2001	64.84	47.1
2011	74.04	58.95

व्यावसायिक स्थिति के अनुसार उत्तरदायित्व:

बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ भारतीय समाज जाति उन्मुख से वर्ग उन्मुखी हो गया है [11]। अनेक शहरी क्षेत्रों को वर्ग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। हालांकि, भारत के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों का परिप्रेक्ष्य अलग है, जहां औद्योगिकीकरण इतना प्रसार नहीं कर सका है; वे अभी भी कुटीर उद्योगों या पारिवारिक व्यवसायों तक सीमित हैं (इन्हें वंशानुगत व्यवसाय भी कहा जा सकता है)। कुछ उत्तर-पूर्वी राज्यों में कोई बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान नहीं है। इसके पीछे के कारण भौगोलिक बाधाएं और यहां तक कि गरीबी भी हो सकती है; प्रचलित अर्थव्यवस्था ज्यादातर निम्नतम अर्थव्यवस्था की होती है। कई लोग स्वयं को कुटीर उद्योगों जैसे पशुपालन, प्राथमिक स्तर पर कृषि, बुनाई, शिल्प आदि में संलग्न करते हैं। अखिल भारतीय स्तर पर जनजातीय श्रमिकों का प्रमुख योगदान ग्रामीण और प्राथमिक कार्यों में है। मध्यम और तृतीयक कार्यों में उनकी निर्भरता केवल मामूली है [12]। आदिवासी कार्यबल की क्षेत्रीय संरचना कृषक समुदायों के स्तर पर देखी जा सकती है। झारखंड में कृषि मज़दूर, घरेलू उद्योगों के श्रमिक और अन्य श्रमिक तथा ये सभी श्रेणियां अनुसूचित जनजाति के मुख्य श्रमिक वर्गों के अंतर्गत आती हैं।

तालिका 4 व्यावसायिक स्थिति के अनुसार उत्तरदायित्व का व्याख्यान.

व्यावसायिक स्थिति	धालभूमगढ़	अरकोसा	दैनिक दांव
-------------------	-----------	--------	------------

	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
दैनिक दांव	95	45.67	78	59.09	173	50.88
किसान	44	21.15	32	24.24	76	22.35
कुशल श्रम	32	15.38	9	6.82	41	12.06
सेवा धारक	9	4.33	3	2.27	12	3.53
व्यापार धारक	8	3.85	2	1.52	10	2.94
छोटा					3	
दुकानदार	7	3.37	4	3.03		3.24
पेशेवर	4	1.92	1	0.76	5	1.47
बेरोजगार	9	4.33	3	2.27	12	3.53
कुल	208	100	132	100	340	100

परिवार के आकार के अनुसार साक्षरता:

परिवार का आकार सामान्यतः व्यवसाय या परिवार के कार्य प्रकार पर निर्भर करता है। अधिकांश आदिवासी समुदायों में, जहाँ पारिवारिक व्यवसाय की तरह छोटे उद्योग प्रचलित हैं, काम करने के लिए परिवार के सदस्यों की आवश्यकता होती है। इस कारण परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक होती है। वहीं, सरकारी और अन्य क्षेत्रों में, जैसे एनजीओ या निजी क्षेत्र में, एकल परिवार की स्थापना अधिक प्रचलित हो रही है [13]। कुछ समुदायों में संयुक्त परिवार प्रथा और विस्तारित परिवार व्यवस्था का पालन किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप इन परिवारों में सदस्यों की संख्या अधिक होती है। यह देखा गया है कि पारंपरिक दृष्टिकोण के अनुसार परिवार जितना बड़ा होता है, आर्थिक सहयोग उतना अधिक होता है। इसके अलावा, यह भी देखा गया है कि बड़े परिवारों में बच्चों की बेहतर देखभाल की जाती है और बुजुर्गों को सम्मान और सुरक्षा प्रदान की जाती है। इस कारण, समाजीकरण और नागरिक अधिकारों की देखभाल में बड़े परिवारों का योगदान अधिक होता है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में, संयुक्त परिवार की प्रथा धीरे-धीरे कम हो रही है, और एकल परिवार की ओर प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिवार के सदस्यों की संख्या के बारे में डेटा एकत्र किया जाता है, जिसे तालिका 5 में प्रस्तुत किया जाएगा:

तालिका 5 परिवार के स्थिति के अनुसार साक्षरता का विवरण परिवार की स्थिति.

परिवार के सदस्यों की संख्या	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1-3	26	12.5	12	9.09	38	11.18
4-5	36	17.31	35	26.52	71	20.88
6-7	68	32.69	37	28.03	105	30.88
8-9	31	14.9	27	20.45	58	17.06
10+	47	22.6	21	15.91	68	20
कुल	208	100	132	100	340	100

परिवार के प्रकार के अनुसार साक्षरता:

भारतीय समाज में दो प्रमुख प्रकार की पारिवारिक व्यवस्थाएँ पाई जाती हैं: एकल परिवार और विस्तारित या संयुक्त परिवार। परिवार का प्रकार परिवार के सदस्यों की कुल संख्या और उनके व्यवसाय से संबंधित होता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, परिवार के सदस्यों की संख्या के साथ-साथ आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदायों के व्यवसाय में भी भिन्नता होती है। गैर-आदिवासी समुदाय आमतौर पर संयुक्त परिवार की व्यवस्था को अपनाते हैं, जबकि आदिवासी समुदाय में यह व्यवस्था पूरी तरह से लागू नहीं होती है। यह स्थिति झारखंड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि वहाँ परिवार की संरचना और आर्थिक कार्यों में अंतर देखा जाता है, जो परिवार के आकार और प्रकार के आधार पर भिन्न हो सकते हैं:

तालिका 6 परिवार के प्रकार के अनुसार साक्षरता का विवरण.

परिवार का प्रकार	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
संयुक्त	138	66.35	59	44.7	197	57.94
नाभिकीय	70	33.65	73	55.3	143	42.06

कुल	208	100	132	100	340	100
------------	------------	------------	------------	------------	------------	------------

घरेलूमुख्यता द्वारा साक्षरता:

तालिका में झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों, धालभूमगढ़ और अरकोसा, में घर के मुखिया के रूप में पुरुषों और महिलाओं की संख्या का विवरण दिया गया है। कुल 340 परिवारों में से 93.82% में पुरुष घर के मुखिया हैं, जबकि केवल 6.18% परिवारों में महिला मुखिया हैं। धालभूमगढ़ और अरकोसा दोनों ही क्षेत्रों में पुरुषों की भूमिका प्रमुख है, जो पारंपरिक रूप से घर की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं [14]। यह दर्शाता है कि आदिवासी समाज में महिलाओं का नेतृत्व और निर्णय लेने की भूमिका बहुत सीमित है, और उनके सशक्तिकरण की दिशा में अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

तालिका 7 प्रतिवादी के अनुसार साक्षरता का विवरण (घर का मुखिया).

घर का मुखिया	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
पुरुष	195	93.75	124	93.94	319	93.82
महिला	13	6.25	8	6.06	21	6.18
कुल	208	100	132	100	340	100

5. निष्कर्ष

झारखंड की आदिवासी महिलाओं के उत्थान में उम्र, विवाह, शैक्षिक योग्यता, और व्यावसायिक स्थिति जैसे तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान है। उम्र के अनुसार, महिलाएं सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियों से बंधी होती हैं, विशेष रूप से विवाह योग्य उम्र में, जो उनके व्यक्तिगत विकास में रुकावट डालती है। विवाह के बाद, महिलाओं की स्थिति और सशक्तिकरण उनके परिवार और समाज की मानसिकता पर निर्भर करता है, जहां अधिकांश मामलों में निर्णय लेने की शक्ति पुरुषों के पास होती है। हालांकि, कुछ परिवारों में महिलाएं प्रमुख निर्णय निर्माता बनती हैं, लेकिन यह स्थिति समाज के बड़े हिस्से में नहीं देखी जाती। शैक्षिक योग्यता भी महिलाओं के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के प्रयास किए गए हैं, फिर भी साक्षरता दर सामान्य आबादी से कम है, जिससे विकास में रुकावट आती है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों, कर्तव्यों, और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक होती हैं, जो उनके सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। व्यावसायिक स्थिति भी

महिलाओं के उत्थान में एक महत्वपूर्ण पहलू है। झारखंड की आदिवासी महिलाएं मुख्य रूप से कृषि, घरेलू उद्योगों, और छोटे व्यवसायों से जुड़ी हुई हैं, जहां उनका योगदान महत्वपूर्ण है, लेकिन वे बड़े पैमाने पर औद्योगिक और तृतीयक कार्यों से बाहर रहती हैं। परिवार के आकार का भी महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव पड़ता है, जहां बड़े परिवारों में अधिक आर्थिक सहयोग और सामाजिक सहयोग होता है, जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार होता है।

भविष्य का दायरा

- आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि और साक्षरता दर में सुधार।
- महिलाओं को औद्योगिक और तृतीयक क्षेत्रों में रोजगार के लिए कौशल प्रशिक्षण।
- महिलाओं के निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाने के लिए मानसिकता में बदलाव।
- महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए नई नीतियों का निर्माण और कार्यान्वयन।
- महिलाओं के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के लिए योजनाओं का विस्तार।

6. संदर्भ

1. सिंह, आर. (2018). झारखंड में आदिवासी महिलाओं की स्थिति: सामाजिक और आर्थिक पहलू
2. कुमार, एम. (2018). आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण और सरकारी योजनाएं: झारखंड में एक अध्ययन.
3. सिंह, जे., और यादव, एस. (2017). झारखंड की आदिवासी महिलाओं के रोजगार के अवसर और चुनौतियां.
4. राम, स. (2017). झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण.
5. वर्मा, आर. (2016). झारखंड में आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा की स्थिति: एक विश्लेषण.
6. शर्मा, पी. (2016). झारखंड में आदिवासी महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकार और उसकी स्थिति.
7. दास, एस., और चौधरी, ए. (2015). झारखंड में आदिवासी महिलाओं की भूमिका: सामाजिक-आर्थिक पहलू
8. कुमार, आर. (2015). झारखंड की आदिवासी महिलाओं के अधिकार और उनका सशक्तिकरण.
9. सिंह, एस. (2014). झारखंड में आदिवासी महिलाओं के लिए विकास कार्य योजनाओं की समीक्षा.

10. महतो, प. (2014). झारखंड के आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति और विकास के उपाय.
11. भट्टाचार्य, ए. (2013). झारखंड की आदिवासी महिलाओं पर सांस्कृतिक प्रभाव और विकास की संभावनाएं.
12. शर्मा, म. (2013). झारखंड में आदिवासी महिलाओं का शहरीकरण और उनके सामाजिक अधिकार.
13. सिंह, र. (2012). झारखंड में आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और विकास योजनाएं.
14. कुमार, व. (2012). झारखंड की आदिवासी महिलाओं के रोजगार की स्थिति: एक संक्षिप्त अध्ययन.